

वेदों की सार्वभौमिकता और मानव मार्गदर्शन

डॉ० तोशेन्द्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत)

शिक्षा विभाग

महावीर विश्वविद्यालय, पोहल्लू

सरधना रोड़, मेरठ, उत्तर प्रदेश

शोध सारांश

सार्वभौमिकता का अर्थ है— वह गुण जो हर जगह, हर समय और सभी पर लागू होता है या ऐसा सिद्धान्त जिसका पालन सभी के लिए समान रूप से होता है, बिना किसी अपवाद के। यह सभी लोगों के लिए समान अधिकारों, निष्पक्षता और न्याय का प्रतिनिधित्व करता है, चाहे उनकी स्थिति या पहचान कुछ भी हो।

दर्शनशास्त्र के सन्दर्भ में— सार्वभौमिकता वह विचार है जो कहता है कि तथ्य या सिद्धान्त जो सभी काल और स्थान में सत्य है। यह सापेक्षवाद के विपरीत है, जो मानता है कि कोई भी चीज निरपेक्ष रूप से सत्य नहीं है।

व्यवहारिक अनुप्रयोग में— सार्वभौमिकता का मतलब है किसी भी विचार, नियम या प्रक्रिया को सम्पूर्ण जगत में समान रूप से लागू होना चाहिए, न कि किसी विशेष समूह या स्थान के लिए उदाहरण के लिए, गुरुत्वाकर्षण का नियम एक सार्वभौमिक नियम है। जो पूरे ब्रह्माण्ड में समान रूप से लागू है।

शिक्षा के सन्दर्भ में—भारत में, सार्वभौमिकता का अर्थ है वैश्विक स्तर पर समस्त जीवित प्राणियों और मानवों के लिए सामान्य, समान अधिकार और अवसर प्रदान करने सिद्धान्त से है। जहाँ कोई छोटा—बड़ा, ऊँच—नीच, जातिभेद, वर्णभेद आदि की कोई गुंजाइश न हो सबको समान रूप से समान शिक्षा एवं समान अधिकार प्राप्त हों, जो सभी मानवों का मार्गदर्शन करे। सभी को प्रेमपूर्वक, मिल—जुलकर रहना सीखाये वही सिद्धान्त मानव का उत्थान कर सकता है, ऐसी शक्ति वेदों में निहित है। वेद ही मानव का मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

कुंजी शब्द— वेद, सार्वभौमिकता एवं मानव मार्गदर्शन

भारतीय इतिहास में मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन धरोहरों में से यदि किसी एक ग्रन्थ का नाम लिया जाये तो वेद सर्वप्रथम आते हैं। इन्हे 'अपौरुषेय' कहा गया है अर्थात् इनकी रचना किसी मनुष्य ने नहीं की, बल्कि यह शाश्वत और अनादि ईश्वर की वाणी के रूप में प्रकट हुए हैं। यही कारण है कि इनकी शिक्षा किसी विशेष जाति, भाषा या देश की नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की धरोहर है। वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं बल्कि जीवन की सम्पूर्ण आचार संहिता है। यदि मानव शान्ति और संतुलन चाहता है तो उसे वेदों की सार्वभौमिकता को जानना होगा। वेद विज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र, चिकित्सा, शिक्षा और पर्यावरण का भी आलोक है। इनका चिन्तन सीमाओं से परे है— सार्वभौमिक, सर्वव्यापी और सर्वकालिक है।

सार्वभौमिक शब्द जो चरित्र, ज्ञान, रुचियों या गतिविधियों की एक श्रृंखला है। ये वह सिद्धान्त हैं जो ईश्वर के सार्वभौमिक पितृत्व और सभी आत्माओं के मोक्ष पर जो देता है।

वेदों की सार्वभौमिकता का विस्तृत विवेचन—

1. सत्य और धर्म की स्थापना—

वेद सत्य को ही धर्म की आधारशिला मानते हैं। तैत्तिरीय उपनिषद् कहता— सत्यं वद, धर्मं चर। अर्थात् सत्य बोलो और धर्म का आचरण करो। यह किसी धर्म, सम्प्रदाय विशेष की नहीं, बल्कि हर मनुष्य के लिए अनिवार्य जीवन सूत्र है। आज सब असत्य, भ्रष्टाचार और छल—कपट हर क्षेत्र में व्याप्त है, वेद हमें स्मरण कराते हैं कि हमारी सभ्यता का आधार सत्य और धर्म ही है मुण्डकोपनिषद् में कहा है— ‘सत्यमेव जयते’ अर्थात् सत्य की ही जीत होती है।

2. मानव समानता और बन्धुत्व— ऋग्वेद का उद्घोष है—

अज्येष्ठामी अकनिष्ठास एवे सं भ्रातरः सभ्यं आवन्त। ऋग्वेद (5/60/5)

अर्थात् न कोई बड़ा है, न छोटा’ सभी भाई हैं और समाज की रक्षा करते हैं। यह स्पष्ट करता है कि वेद जाति, वर्ण, वर्ग, रंग या देश—भेद आदि को अस्वीकार करते हैं। मनुष्य मात्र को एक समान दृष्टि से देखने का भाव आज के लोकतांत्रिक मूल्यों की जड़ है।

3. नारी सम्मान और शिक्षा—

भारत देश में नारियों के प्रति सम्मान व्यक्त किया गया है मनुस्मृति में स्पष्ट कहा है— ‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।’ (मनुस्मृति—तृतीय अध्याय—56 वां श्लोक) नारी पूजा होती है वहाँ स्वयं देवता निवास करते हैं।

ऋग्वेद (10.85.46) में स्त्री को साम्राज्ञी कहा गया है— ‘साम्राज्ञी श्रशुरे भव, साम्राज्ञी श्रधयां भव।’ अर्थात् स्त्री को गृह और समाज का विद्या और ज्ञान अर्जन का समान अधिकार दिया गया है। इसका आशय है कि वेद स्त्री को केवल गृहस्थी तक सीमित नहीं करते, बल्कि उसे समाज निर्माण और ज्ञानार्जन में पुरुषों के समकक्ष स्थान देते हैं। यह दृष्टि आज के सन्दर्भ में नारी समता की बहस से कहीं अधिक उन्नत है।

स्त्री शिक्षा के विषय में वेदों में निर्देश दिया गया है कि— नारी को प्रेममय दृष्टि वाली, पति से विरोध न करने वाली, मंगल कारिणी, पशुओं को सुखदात्री, पवित्र अन्तःकरण युक्त, प्रसन्नचित्त, सुन्दर शुभगुण कर्म स्वभाव और विद्या से सुप्रकाशित, उत्तम वीर पुरुषों को उत्पन्न करने वाली, देवकामा, सुखयुक्त एवं दो या चार पैरों वालों के लिए सुख देने वाली बताया गया है ऋग्वेद (10.85.44)

- नारी को मृदु, क्रोध न करने वाली, पवित्रता, प्रियवादिनी तथा अनुकूल आचरण करने वाली बताया है। अथर्ववेद 3/25/4
- नारी को पति के लिए माधुर्य भरे, शान्तिदायक वचन बोलने वाली बताया है। अथर्ववेद 3/30/2
- नारी को ज्ञानमुक्त कल्याणकारिणी, शान्ति एवं सुख देने वाली लक्षित किया गया है। अथर्ववेद 7/68/3

अन्यत्र शास्त्रों में भी उल्लेख किया गया है कि— ‘बिन घरनी, घर भूत का डेरा।’ अर्थात् बिना गृहिणी यानी बिना नारी के घर, घर नहीं भूत—प्रेत आदि शक्तियों का डेरा बन जाता है। अर्थात् नारियों का पुरुषों के समान महत्व है।

4. प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण—

अथर्ववेद (12.11.12) कहता है कि— ‘माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।’

अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। यह मंत्र मानव और प्रकृति के बीच भावनात्मक रिश्तों की घोषणा करता है। आधुनिक समय में जब जलवायु परिवर्तन प्रदूषण, प्राकृतिक असन्तुलन और ससाधनों के अंधाधुंध दोहन मानव को विनाश की ओर ले जा रहा है। ये मानव के लिए गम्भीर चुनौती बन चुके हैं, तब वेद हमें सिखाते हैं कि पृथ्वी का शोषण नहीं, संरक्षण करना मानव का परम कर्तव्य है।

5. विश्वबन्धुत्व और शान्ति का सन्देश—

ऋग्वेद (10.191.2) हमें यह निर्देश देता है कि— ‘संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वा मनासि जानतम्।’ (अर्थात् हम सब मिलकर चलें, मिलकर बोले और हमारे विचार एक हों)

यह मन्त्र मानव एकता और विश्वबन्धुत्व का उद्घोष करता है। यह विचार मात्र भारतीय समाज तक सीमित नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को शान्ति और सहअस्तित्व का मार्ग दिखाता है।

6. विज्ञान और तर्क की दृष्टि—यजुर्वेद (40.8) में परमात्मा का वर्णन है—

‘स पर्यगात् शुक्रमकायमव्रणं शुद्धमपापविद्धम्’

अर्थात् यह परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है, शरीर रहित, निष्पाप और शुद्ध है। यह विवरण आधुनिक भौतिक विज्ञान के उस सिद्धान्त से मेल खाता है जिसमें ऊर्जा सर्वव्याप्त है और नाशरहित है। स्पष्ट है कि वेद श्रद्धा और विज्ञान दोनों को लेकर चलते हैं। जिस प्रकार विज्ञान विशिष्ट ज्ञान का प्रदाता है। उसी प्रकार वेद विशिष्ट ज्ञान का उद्गम स्थल है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वेद—

आज के वर्तमान युग में भी वेद हमें भली भाँति पर्यावरण संकट के सन्दर्भ में वेद कहते हैं— प्रकृति हमारी माता है अतः हमें इसका शोषण नहीं, संरक्षण करना चाहिए। यदि हम प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करते हैं तो उसका परिणाम प्रलयकारी होगा।

- **सामाजिक असमानता और वेद—** वेद उद्घोष करते हैं— न कोई बड़ा है, न छोटा, सभी भाई हैं। वेद हमें यह बताते हैं कि इस संसार में सभी प्राणियों का महत्व है, सभी की सहभागिता है। यहाँ सभी मानव परस्पर भाईचारे की भावना से जीवन निर्वाह करते हैं यहाँ न कोई छोटा है, न बड़ा है। वेद असमानता के पक्षधर नहीं हैं।
- **नारी असमानता और वेद—** वेद स्त्री को भी विद्या—ज्ञानार्जन और सम्मान के लिए पुरुषों के बराबर ही महत्व देते हैं। वेद नारी को साम्राज्ञी का दर्जा देते हैं।
- **वैश्विक युद्ध की आशंका और वेद—** वेद शान्ति, सहअस्तित्व और समन्वय का मार्ग सुझाते हैं। वेद आपस में मिलजुलकर भाईचारे की भावना के साथ जीने की बात करते हैं। वेद सम्पूर्ण विश्व में बन्धुत्व की भावना स्थापित करना चाहते हैं। ताकि किसी भी व्यक्ति अथवा देश के नागरिकों के मन में ईर्ष्या, द्वेष की भावना घर न करे। किसी प्रकार के लड़ाई—झगड़े न हो अथवा विश्व युद्ध की आशंका न हो।
- **नैतिक पतन और वेद—** आज के वर्तमान समय में भी वेद मनुष्य को सत्य और धर्म का आचरण करने का आवाहन करते हैं। जबकि कुछ व्यक्तियों का नैतिक पतन हो चुका है। वेद मानव जाति का उचित मार्गदर्शन करके उन्हें सही राह पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि उनका नैतिक पतन हो सके।

प्रमुख विचारकों की दृष्टि में वेद—

- **स्वामी दयानन्द सरस्वती—** दयानन्द जी का कथन है कि वेद ही सच्चा धर्मशास्त्र है, वेदों में ही सब विधाओं का मूल है।
- **महात्मा गाँधी—** गांधी जी का कथन है कि वेदों में शान्ति और कल्याण का जो संदेश दिया गया है यही आज की दुनिया को चाहिए।
- **अरविन्द घोष—** घोष जी का कथन है कि वेद चेतना के उच्चतम शिखर उद्घोष हैं।

- **मैक्समूलर (जर्मन विद्वान)—** मैक्समूलर जी का कथन है कि यदि मैं पृथ्वी पर किसी धर्मग्रन्थ को शाश्वत मानता हूँ तो वह केवल वेद हैं। इन दृष्टिकोणों से सिद्ध होता है कि वेद यज्ञ की सीमा में कैद नहीं, बल्कि विश्वमानव की सामूहिक धरोहर है।
- **स्वामी विवेकानन्द—** विवेकानन्द जी ने कहा था कि वेदों का ज्ञान आज उतना ही नया है जितना सहस्रों वर्ष पूर्व था, क्योंकि वह शाश्वत है। यदि हम वैदिक मूल्यों सत्य, धर्म, प्रकृति—प्रेम, योग, समानता और सहयोग को अपनाएँ तो न केवल व्यक्ति का जीवन सुन्दर और स्वस्थ होगा, बल्कि सम्पूर्ण समाज शान्ति और समृद्धि की ओर अग्रसर होगा।

निष्कर्ष—

वेदों की सार्वभौमिकता का गहन अध्ययन एवं चिंतन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वेद सत्य और धर्म का मार्ग प्रशस्त करते हैं। समाज में सबके प्रति समानता का भाव रखते हैं। नारी सम्मान की गारंटी देते हैं। प्रकृति के संरक्षण का संकल्प लेने के लिए मनुष्यों को प्रेरित करते हैं और विश्वबन्धुत्व एवं शान्ति का उद्घोष करते हैं।

यदि सम्पूर्ण मानवता वेदों के इस प्रकार शाश्वत चिंतन करे और वेदों का गहन करके उनके सार तत्व, जीवन सम्बन्धी आचार—विचार—व्यवहारों को आत्मसात् कर लें, तो निश्चित ही संसार एक बार फिर शान्ति न्याय और समृद्धि के युग में प्रवेश कर सकता है तथा भारतवासियों अपने देश पर निश्चित ही गर्व होगा तथा भारत देश पुनः 'विश्वगुरु' बन सकता है तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती का नारा— 'वेदों की ओर लौटो' वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची—

- 1- अपौरुषेय (ऋग्वेद)
- 2- यजुर्वेद (16.44)
- 3- अघैरक्षुरपतिहन्त्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।
- 4- वीरसूर्देवृकरामा स्थोना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ (ऋग्वेद 10/85/44)
- 5- मृदुर्निमन्युः केवी प्रियवादिन्यनुव्रता॥ (अथर्ववेद 3/25/4)
- 6- जाया जल्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम॥ (अथर्ववेद 3/30/2)
- 7- शिवा नः शन्तमा भव सुमृतीका रस्वति॥ (अथर्ववेद 7/38/3)
- 8- संगच्छध्वं स वदध्वं स वो मनासि जानतम्'। (ऋग्वेद 10.191.2)
- 9- महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, अरविन्द घोष तथा स्वामी विवेकानन्द आदि प्रमुख भारतीय दार्शनिकों के कथन एवं विचार।
- 10- मैक्समूलर (जर्मन विद्वान) का कथन एवं विचार।
- 11- दैनिक समाचार—पत्र।